बेनिन ब्रॉन्ज़

जर्मनी ने बेनिन से लूटी गई 20 बेनिन ब्रॉन्ज़ पट्टकिाएँ और मूर्तयिाँ नाइजीरयिा को लौटा दीं।

- जुलाई 2022 में जर्मनी द्वारा नाइजीरयिा के साथ लगभग **1,100 बेनिन ब्रॉन्ज़** के स्वामत्वि के हस्तांतरण हेतु समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद इन **कीमती कलाकृतयिों की वापसी हुई।**

बेनिन ब्रॉन्ज़:

- **बेनिन ब्रॉन्ज़ वर्तमान नाइजीरयिा में बेनिन के प्राचीन साम्राज्य की 3,000 से अधकि मूर्तयिों और कलाकृतयिों का एक समूह है।** यह लगभग 16वीं शताब्दी का है।
  - **वर्ष 1897 में बेनिन शहर पर कुख्यात छापे के दौरान ब्रटिशि औपनविशकि ताकतों द्वारा इन्हें लूट लयिा गया था।**
- इनमें से कई कलाकृतयिाँ **वशिष रूप से राजाओं या ओबास और राज्य की राजमाताओं** के लयि अधकिृत कयि गए थे।
- ये कलाकृतयिाँ बेनिन **साम्राज्य की संस्कृत के साथ-साथ पड़ोसी राज्यों के साथ इसके संबंधों के बारे** में अंतर्दृष्ट प्रिदान करती हैं। इनमें से कुछ कलाकृतयिाँ यूरोपीय लोगों के साथ राज्य के संबंधों की भी प्रदर्शति करती हैं।

//

अन्य लूटी गई कलाकृतयिों को देशों द्वारा वापस कयि जाने की मांग:

- **कोह-ए-नूर हीरा:**
  - वभिाजन-पूर्व भारत और ब्रटिशि राज में **कोह-ए-नूर का एक लंबा इतहिास** रहा है। ऐसा माना जाता है क**वि र्तमान आंध्र प्रदेश में इसका खनन** कयि गया था।
  - **दूसरे एंग्लो-सखि युद्ध** के दौरान वर्ष 1849 में रानी वक्टिोरयिा द्वारा हीरे का अधग्रिहण कयि गया था, इसी समय **पंजाब को ईस्ट इंडयि कंपनी के अधीन** लाया गया था।
  - लाहौर की अंतमि संधपिर हस्ताक्षर के बाद अंग्रेज़ों ने इस हीरे को अपने कब्ज़े में ले लयि था।
    - **लॉर्ड डलहौज़ी और महाराजा दलीप सहि के बीच 1849 में हुई लाहौर संध** के तहत **कोहनिूर हीरे** को **लाहौर के महाराजा ने इंग्लैंड की महारानी को सौंप दयि** था।
- **रॉसेटा स्टोन:**
  - दूसरा प्रसद्धि उदाहरण **रॉसेटा स्टोन** है। वर्तमान में ब्रटिशि संग्रहालय में प्रदर्शति यह मस्रि का एक प्राचीन पत्थर है जसिमें शलिालेख हैं, यह मस्रि-वज्ञिान का आधार है।
  - मस्रि को जीतने के लयि सम्राट के अभयिान के दौरान वर्ष 1799 में राशदि (रॉसेटा) शहर के पास नेपोलयिन बोनापार्ट की सेना द्वारा पत्थर की खोज की गई थी। वर्ष 1801 में फ्राँसीसयिों को हराने के बाद इसे अंग्रेज़ों को सौंप दयि गया था।

[स्रोत :इंडयिन एक्सप्रेस](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/benin-bronze